कृपा करी साथ सिरदारों, मुझ पर हुए मेहेरबान।
निरगुन होए न्यारी रहूं, छोड़ बड़ाई गुमान।।७ ।।

मेरे सिरदार सुन्दरसाथ ने मेहरबान होकर मुझ पर कृपा की जो मुझे समझाया। अब अपने गुमान और अहंकार छोड़कर निर्गुण होकर न्यारी रहूं, यही अच्छा लगा।

दिन कयामत के आए पोहोंचे, अब कैसी ठकुराई।
धिक धिक पड़ो तिन बुध को, जो अब चाहे बड़ाई।।८ ।।

अब ब्रह्माण्ड को अखण्ड करने का समय आ गया है। अब सुन्दरसाथ में क्या सिरदारी करना? ऐसी बुद्धि को धिक्कार है जो अब भी मान चाहती है।

अब हुकम चढ़ाऊं सिर साथ को, बकसो मेरी भूल।
भी दीजो सिखापन मुझको ज्यों होऊं सनकूल।।९ ।।

अब सुन्दरसाथ का जो हुकम होगा, मैं वही करूंगी। हे साथजी' मेरी भूल को माफ करो। मुझे समझाओ कि किस तरह से मैं धनी के सामने खड़ी हो सकूं।

इन जिमी में साथ में, जिनों करी सिरदारी।
पुकार पुकार पछताए चले, जीत के बाजी हारी।।१० ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस माया में जिन्होंने भी सुन्दरसाथ पर नेतागिरी की, वह अन्त समय पुकार-पुकार के कहेंगे कि हमने जीती बाजी नेता बन के हारी है।

सो देख के ना हुई चेतन, मूढ़मती अभागी।
अब लई सिखापन साथ की, महामत कहे पांउं लागी।।११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं ऐसी मूर्ख और अभागिनी हो गई कि सुन्दरसाथ की हकीकत देखकर भी सावचेत नहीं हुई। अब सुन्दरसाथ के सिखापन (शिक्षा) को मैंने उनके चरण पकड़कर ग्रहण कर लिया।

।। प्रकरण ।। १०१ ।। चौपाई ।। १५०३ ।।

राग श्री

बुजरकी मारे रे साथ जी, बुजरकी मारे।
जिन बुजरकी लई दिल पर, तिनको कोई ना उबारे।।१ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मान, बड़ाई ही सर्वनाश करती है। जो मान चाहते हैं उनका उद्धार कोई नहीं कर सकेगा?

आगूं कई मारे बुजरकिएं, जिन दृढ़ कर लई विश्वास।
सो देखे मैं अपनी नजरों, निकस चले निरास।।२ ।।

जिन्होंने दृढ़ता के साथ मान बड़ाई ली उनके जीवन को इसी मान बड़ाई ने नष्ट कर दिया। उनको निराश होकर जाते हुए मैंने अपनी आंखों से देखा है।

कई मारे कई मारत है, ऐसी बुजरकी एह।
न देत देखाई इन माया में, बिना बुजरकी जेह।।३ ।।

यह मान-बड़ाई ऐसी कमबख्त है कि इसने कईयों के जीवन नष्ट कर दिए और कईयों के कर रही है' इस माया के संसार में कोई ऐसा नहीं दिखता जो मान-सम्मान न चाहता हो।

Nijanand App

जेती बुजरकी बीच दुनी के, सो सब कुफर हथियार।
कुफरों में कुफर बुजरकी, काम क्रोध अहंकार।। ४ ।।

इस दुनियां में जितनी भी मान-बड़ाई है वह सब झूठे पाप के हथियार हैं। दुनियां में काम, क्रोध और अहंकार से भी बड़ा पाप मान-बड़ाई लेने का है।

इन माया में कोई बुजरकी, छूट खुदा जो लेवे।
सो तेहेकीक आपे अपना, पाया फल सो भी खोवे।। ५ ।।

इस संसार में पारब्रह्म को ही बुजरकी शोभा देती है। वह इस योग्य हैं। उन्हें छोड़कर जो मान-बड़ाई लेता है, वह निश्चित ही अपना पाया फल भी गंवा देता है।

खोवे जोस बंदगी खोवे, और साहेब की दोस्ती।
बिना इस्क जो बुजरकी, सो सब आग जानो तेती।। ६ ।।

मान-बड़ाई चाहने वाला अपने आत्म बल को, बन्दगी के फल को और धनी के प्यार को खो देता है। बिना धनी के इश्क के मान-बड़ाई आग के समान है, अर्थात् परमहंस पद प्राप्त होने पर मान और बड़ाई का ध्यान ही नहीं होता।

दुनियां में दोऊ लड़त हैं, एक कुफर दूजा ईमान।
जीती कुफरें त्रैलोकी, ईमान दिया सबों भान।। ७ ।।

दुनियां में कुफर और ईमान की लड़ाई है। कुफर ने त्रिलोकी को जीत रखा है और सबके ईमान को तोड़ दिया है।

कुफर की हुई पातसाही, चौदे तबक चौफेर।
सब दुनियां को बेमुख करके, बैठा बुजरकी ले अंधेर।। ८ ।।

इसलिए चौदह लोकों में चारों तरफ कुफर की ही बादशाही है इस कुफर ने सारी दुनियां को पारब्रह्म से विमुख कर दिया है और अज्ञानता लेकर बुजरक बन बैठा है।

मोको मार छुड़ाई बंदगी, सो भी बुजरकी इन।
ऐसी दुस्मन ए बुजरकी, मैं देखी न एते दिन।। ९ ।।

इस मान-बड़ाई ने मुझे पारब्रह्म के चितवन से दूर कर दिया। मान बड़ाई जैसा दुश्मन मैंने आज दिन तक देखा नहीं।

पूरन मेहेर भई धनी की, दोऊ हादिऐं करी चेतन।
सो भी बुजरकी देखी दुस्मन, जो भिस्त दई सबन।। १० ।।

अब मुझ पर धनी की पूरी कृपा हुई और दोनों हादी (श्री राजजी और श्यामाजी) ने मुझे सावचेत (सावधान) कर दिया। अब मेरे हाथों से सारे संसार को बहिश्तें दिलवाने का काम करवाया। इतने बड़े काम होने पर भी बुजरकी दुश्मन के समान लगी।

जो कोई मारे इन दुस्मन को, करे सब दुनियां को आसान।
पोहोंचावे सबों चरन धनी के, तो भी लेना ना तिन गुमान।। ११ ।।

जो कोई इस मान-बड़ाई जैसे दुश्मन को मार देगा, उसका दुनियां में जीना सरल और सुगम हो जाएगा। दुनियां का भी वह सरल रास्ता हो जाएगा। वह सारी दुनियां को श्री राजजी के चरणों में पहुंचा करके भी अपने ऊपर अहंकार न लेगा।

Nijanand App

महामत कहे ईमान इस्क की, सुक्र गरीबी सबर।
इन बिध रूहें दोस्ती धनी की, प्यार कर सके त्यों कर।। १२ ।।

अब श्री महामतिजी कहते हैं कि जिन्हें अपने धनी के चरणों को प्राप्त करना हो, वह ईमान और इश्क के लिए गरीबी और नम्रता को जैसे भी धारण कर सके, तैसे करे।

॥ प्रकरण ॥ १०२ ॥ चौपाई ॥ १५१५ ॥

राग श्री गौड़ी

जो तूं चाहे प्रतिष्ठा, धराए वैरागी नाम।
साध जाने तोको दुनियां, वह तो साधों करी हराम।। १ ।।

यदि तुम वैरागी बनकर भी मान-मर्यादा की चाहना रखते हो, तो दुनियां वाले तुम्हें साधु जरूर समझेंगे। वह वास्तव में, तुम हो नहीं, क्योंकि साधु लोग मान, प्रतिष्ठा को बुरा समझकर छोड़ देते हैं।

मार प्रतिष्ठा पैजारों, जो आए दगा देत बीच ध्यान।
एही सरूप दज्जाल को, उड़ाए दे इनें पेहेचान।। २ ।।

जो मान-मर्यादा धनी के ध्यान करने में रुकावट डालती है उस प्रतिष्ठा को जूतों से ठुकरा दो। यह प्रतिष्ठा ही दज्जाल का रूप है जो धनी की पहचान नहीं करने देता।

इस दुनियां के बीच में, कोई भला बुरा केहेवत।
तूं जिन देखे तिन को, ले अपनी अर्स खिलवत।। ३ ।।

दुनियां में कोई भला कहे या बुरा, उनकी तरफ मत देखो। तुम श्री राजजी के चरणों में ध्यान लगाओ।

दिल दलगीरी छोड़ दे, होत तेरा नुकसान।
जानत है गोविंद भेड़ा, याको पीठ दिए आसान।। ४ ।।

अपने दिल से संसार की आशा को छोड़ दो। इससे तुम्हारा नुकसान होता है। यह संसार मायावी मण्डल है। इसको सहज ही छोड़ दो। यही उपाय है।

ए भोम देखे जिन फेर के, एही जान महामत।
ढील होत तरफ धाम की, जहां तेरी है निसबत।। ५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं दुबारा इस माया की तरफ तुम मत देखना। परमधाम में जहां तुम्हारी परआतम है, वहां चलने में देरी हो रही है।

॥ प्रकरण ॥ १०३ ॥ चौपाई ॥ १५२० ॥

कयामत आई रे साथ जी, कयामत आई।
वेद कतेब पुकारत आगम, जो क्यों न देखो मेरे भाई।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! दुनियां के कायम होने का वह समय आ गया है जिसके लिए वेद और कतेब भविष्यवाणी कर रहे थे। अब उसका विचार तुम क्यों नहीं करते?

आए स्यामाजीएं मोहे यों कह्या, ए खेल किया तुम कारन।
तुम आए खेल देखने, मैं आई तुमें बुलावन।। २ ।।

श्यामाजी ने आकर मुझे कहा कि यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है। तुम खेल देखने आए हो। मैं तुम्हें बुलाने आई हूं।

Nijanand App